



बीजामृत (बीज शोधन)

बीजशोधन का अर्थ है बीजों का बीजजनित और मृदाजनित रोगों से बचाव हेतु तैयार करना। बीजशोधन से बीजों के अंकुरित होने पर क्षमता में वृद्धि हो जाती है। बीजशोधन से बीज जल्द और ज्यादा मात्रा में उगकर आते हैं जड़े गति से बढ़ती हैं और भूमि से पेड़ों पर बीमारियों का प्रकोप नहीं होता है।

निर्माण सामग्री (100 किग्रा बीज हेतु)

- ➔ 5 किग्रा 1 गाय का गोबर
- ➔ 5 लीटर गाय का गौमुत्र
- ➔ 20 लीटर पानी
- ➔ 50 ग्राम चूना
- ➔ 50 ग्राम मेंड़ की मिट्टी



निर्माण सामग्री (100 किग्रा बीज हेतु)

इन सभी सामग्री को किसी बड़े बर्तन में डालकर एक साथ मिला दें। इस मिश्रण को चौबीस घंटे तक रखा रहने दें लेकिन दिन में दो बार लकड़ी से जरूर हिलाएं।

उपयोग

बुवाई के 24 घंटे पहले बीजशोधन करना चाहिए। बिजामृत तैयार हो जाने के बाद बीजों के जमीन में फैलाकर उसके उपर बिजामृत का छिड़काव करें। बीजों को छाया में सुखाएं और इसके बाद में बीज बोएं।

जीवामृत

निर्माण सामग्री (एक एकड़ हेतु)

- ➔ 10 किलोग्राम देशी गाय का गोबर
- ➔ 5 से 10 लीटर गोमुत्र
- ➔ 2 किलोग्राम गुड़ या फलों के गुदों की चटनी
- ➔ 2 किलोग्राम गुड़ या फलों के गुदों की चटनी
- ➔ 2 किलोग्राम बेसन (चना, उड़द, मूंग)
- ➔ 200 लीटर पानी
- ➔ 50 ग्राम मिट्टी



बनाने की विधि

सर्वप्रथम कोई प्लास्टिक की टंकी या सीमेंट की टंकी लें फिर उस पर 200 लीटर पानी डालें। पानी में 10 किलोग्राम गाय का गोबर व 5 से 10 लीटर गोमुत्र एवं 2 किलोग्राम गुड़ या फलों के गुदों की चटनी मिलाएं इसके बाद 2 किलोग्राम बेसन, 50 ग्राम मेड़ की मिट्टी या जंगल की मिट्टी डालें और सभी को डंडे से मिलाएं। इसके बाद टंकी को जालीदार कपड़े से बंद कर दें। सुबह शाम डंडे से घोल को हिलाएं। 40 घंटे बाद जीवामृत तैयार हो जाएगा। इस जीवामृत का प्रयोग केवल 7 दिनों तक कर सकते हैं। प्लास्टिक व सीमेंट की टंकी को छाए में रखें जहाँ धूप ना लगे। गोमुत्र को धातु के बर्तन में ना रखें। छाए में रखा हुआ गोबर का ही प्रयोग करें।

उपयोग

प्रति एकड़ 200 लीटर तैयार जीवामृत सिंचाई के बहते पानी पर बून्द-बून्द टपका कर दें। फसलों और पौधों पर जीवामृत का छिड़काव कर दें। छिड़काव करने से उनको उचित पोषण मिलता है और दाने/फल स्वस्थ होते हैं।

घन जीवामृत

घन जीवामृत मे जीव सुक्ष्म अवस्था में रहते हैं। खेत में डालने पर ये जीव सक्रिय होकर फसल को पोषक तत्व उपलब्ध करवाते हैं।

निर्माण सामग्री (100 किग्रा बीज हेतु)

- ➔ 100 किलोग्राम गाय का गोबर
- ➔ 1 किलोग्राम गुड़/फलो की चटनी
- ➔ 2 किलोग्राम बेसन (चना, उड़द, अरहर, मुंग)
- ➔ 50 ग्राम मेंड या जंगल की मिट्टी
- ➔ 1 लीटर गोमूत्र



बनाने की विधि

सर्वप्रथम 100 किलोग्राम गाय के गोबर को किसी पक्के फर्श व पॉलीथीन पर फैलाएं। एक पात्र में बाद गुड़ या फलों की चटनी, बेसन एवं मेड़ या जंगल की मिट्टी डालकर उसमें गोमूत्र मिलाये। घोल बनाकर घोल को गोबर के ऊपर छिड़क कर फॉवड़ा से अच्छी तरह से मिला दें। इस सामग्री को 48 घंटे तक किसी छायादार स्थान पर एकत्र कर या थापीया बनाकर जूट के बोरे से ढक दें। 48 घंटे बाद उसको छाए पर सुखाकर चूर्ण बनाकर भंडारण करें। इन घन जीवामृत का भंडारण करके 6 माह तक प्रयाग कर सकते हैं। गोबर ताजा ही लें या फिर अधिकतम 7 दिन तक पुराना गोबर का प्रयाग करे। गोमूत्र किसी धातु के बर्तन में न रखें।

उपयोग

एक बार खेत जुताई के बाद घन जीवामृत का छिड़काव करे।

नीमास्त्र

नीमास्त्र का उपयोग रस चुसने वाले कीट एवं छोटी सुंडी, झल्लियों आदि के नियंत्रण के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

- ➔ 5 किलोग्राम नीम पत्तियाँ युक्त टहनियाँ
- ➔ 5 किलोग्राम नीम फलजीम खली
- ➔ 5 लीटर गोमूत्र
- ➔ 1 किलोग्राम गाय का गोबर



बनाने की विधि

सर्वप्रथम प्लास्टिक के बर्तन पर 5 किलोग्राम नीम की पत्तियों की चटनी और 5 किलोग्राम नीम के फल (पीस कर या कुट कर) डालें एवं 5 लीटर गोमूत्र व 1 किलोग्राम गाय का गोबर डालें। इन सभी सामग्री को डंडे से चलाकर जालीदार कपड़े से ढक दें। यह 48 घंटे में तैयार हो जाएगा। 48 घंटे में चार बार डंडे से चलाएँ।

भंडारण एवं अन्य सावधानियाँ

नीमास्त्र का प्रयोग छः माह तक कर सकते हैं। नीमास्त्र की मिट्टी या प्लास्टिक के बर्तन में भरकर छाये में रखें एवं धूप से बचाएँ। गोमूत्र प्लास्टिक के बर्तन में ले या रखें।

उपयोग

प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में तैयार 10 लीटर नीमास्त्र को छानकर मिलाएँ और स्प्रे मशीन से छिड़काव करें।

अग्नी अस्त्र

अग्नी अस्त्र का उपयोग तना कीट फलों में होने वाली सूंडी एवं झल्लियों के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

- ➔ 20 लीटर गोमूत्र
- ➔ 5 किलोग्राम नीम के पत्ते की चटनी
- ➔ आधा किलोग्राम तम्बाकू का पाउडर
- ➔ आधा किलोग्राम हरी तीखी मिर्च
- ➔ 500 ग्राम देशी लहसुन की चटनी

बनाने की विधि

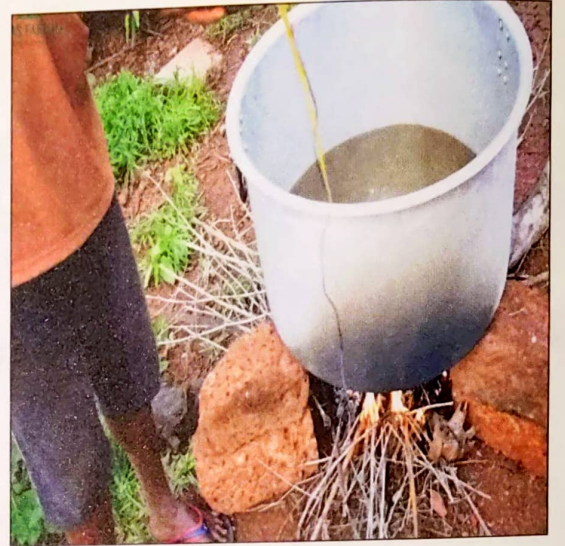
उपयुक्त उपर लिखी हुई सामग्री को एक मिट्टी के बर्तन में डालें और गरम करें। चार बार उबाल आ जाने के बाद आग से उतार कर ठंडा करे। आग से उतारने के बाद 48 घंटे छाए में रखें। 48 घंटे में चार बार डंडे के चलाएं। यह 48 घंटे में तैयार हो जाएगा।

भंडारण एवं अन्य सावधानियां

अग्नी अस्त्र का प्रयोग भंडारण करके केवल तीन माह तक कर सकते हैं। उबालने के लिए मिट्टी के बर्तन को लें। गोमूत्र धातु के बर्तन में न ले न ही भंडारित करे।

उपयोग

प्रति एकड़ के लिए 5 लीटर अग्नी अस्त्र को छानकर 200 लीटर पानी में मिलाकर स्प्रे मशीन या नीम लेवचा से छिड़काव करें।





बिहार सरकार
कृषि विभाग

ब्रम्हास्त्र

ब्रम्हास्त्र का उपयोग अन्य कीट और बड़ी सूंडी इल्लियों आदि के नियंत्रण के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

- ➔ 10 लीटर गोमूत्र
- ➔ 2 किलोग्राम बेल के पत्ते
- ➔ 3 किलोग्राम नीम की पत्ती
- ➔ 2 किलोग्राम अरंडी पत्ती
- ➔ 2 किलोग्राम करंज की पत्ती
- ➔ 2 किलोग्राम धतूरा के पत्ते
- ➔ 2 किलोग्राम सीताफल पत्ती



बनाने की विधि

मिट्टी के बर्तन में गोमूत्र डालकर उसमें उपरोक्त पत्तों की चटनी कर के कोई भी पाँच प्रकार की चटनी को मिला दें। अब बर्तन आग में चढ़ा कर मिश्रण को उबालें। जब चार उबाल आ जाए तो आग से उतारकर 48 घंटे छाए में ठंडा होने दें। इसके बाद कपड़े से छानकर प्रयोग करें

भंडारण एवं अन्य सावधानियां

ब्रम्हास्त्र का प्रयोग छः माह तक कर सकते हैं। भंडारण मिट्टी के बर्तन में करें। ब्रम्हास्त्र को छाये में रखें एवं धूप से बचाएं। ब्रम्हास्त्र को प्लास्टिक के बर्तन में ले या रखें।

उपयोग

प्रति एकड़ 200 लीटर पानी में तैयार 10 लीटर ब्रम्हास्त्र को छान कर मिलाएं और स्प्रे मशीन से छिड़काव करें।

ट्राइकोडर्मा

ट्राइकोडर्मा के प्रयोग की विधि

बीज उपचार

बीज उपचार के लिये प्रति किलो बीज में 5-10 ग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर को मिश्रित कर छाया में सुखा ले फिर बुवाई करें।

कंद उपचार

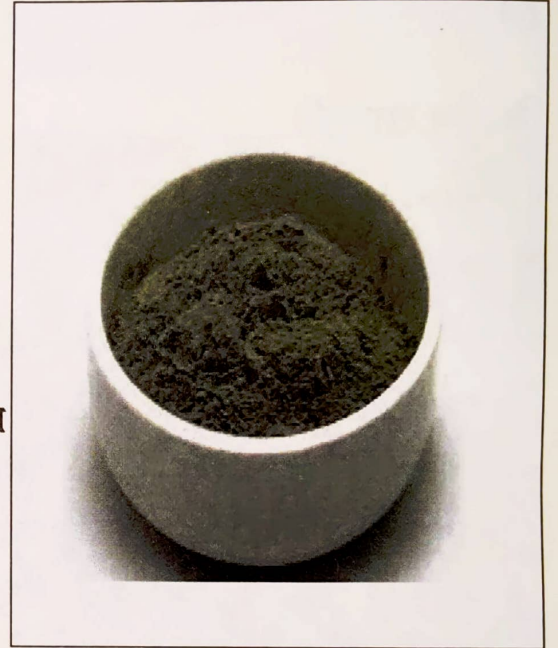
10 ग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति लीटर पानी में डालकर घोल बना लें फिर इस घोल में कंद को 30 मिनट तक डुबाकर रखें इसे छाया में आधा घंटा रखने के बाद बुवाई कर दें।

सीड प्राइमिंग

बीज बोने से पहले खास तरह के घोल की बीजों पर परत चढ़ाकर छाया में सुखाने की क्रिया को सीड प्राइमिंग कहा जाता है। ट्राइकोडर्मा से सीड प्राइमिंग करने हेतु सर्वप्रथम गाय के गोबर का ग्रास प्राइमिंग करने हेतु सर्वप्रथम गाय के गोबर को गारा (स्लरी) बनाएँ। प्रति लीटर गारे में 10 ग्राम ट्राइकोडर्मा उत्पाद मिलाएँ और इसमें लगभग एक किलोग्राम बीज डुबोकर रखें। इसे बाहर निकालकर छाया में थोड़ी देर सूखने दें फिर बुवाई करें। यह प्रक्रिया खासकर अनाज, दलहन और तिलहन फसलों की बुवाई से पहले की जानी चाहिए।

मृदा शोधन

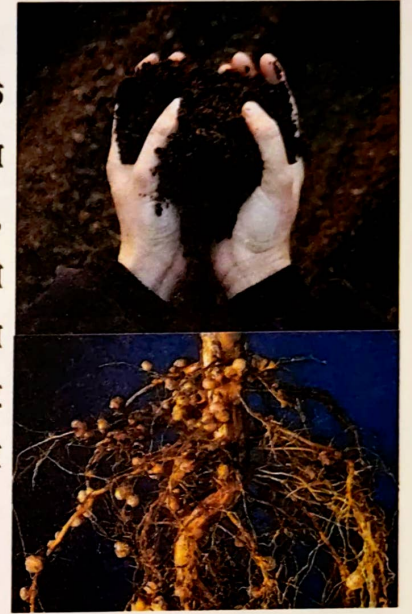
एक किलोग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर को 25 किलोग्राम कम्पोस्ट (गोबर की खड़ी खाद) में मिलाकर एक सप्ताह तक छायादार जगह पर रखकर उसे गीले बोरे से ढके ताकि इसको फसलो में उपयोग किया जा सके।



जैव उर्वरक

बीज उपचार

जैव उर्वरक एक जीवित उर्वरक है। जिसमें सूक्ष्मजीव है। जो भूमि के वायुमण्डलीय नाइट्रोजन एवं स्वतंत्र नाइट्रोजन एवं स्वतंत्र नाइट्रोजन का स्थिरीकरण करते हैं। इसमें बैक्टीरिया, कवक, नीलहरित शैवाल, अजोला, जल फर्न आदि प्रमुख है। इस खाद में विशेष प्रकार के जीवाणु होते हैं जो दलहनी पौधों की जड़ ग्रंथियों में वायुमण्डल से नाइट्रोजन तत्त्व निकट समेट लेते हैं या फिर भूमि से अधुलनशील और स्थायी तत्त्व फास्फोरस को धुलनशील बनाकर उनकी उपलब्धता को बढ़ा देते हैं तथा कई पौधे बृद्धि हारमोन्स को उत्पादन की गति बढ़ाने में सक्षम होते हैं।



(1) राइजोबियम

एक मुख्य जैव उर्वरक है। जो राइजोबियम लेग्यूमिनोसेरस नामक सहजीवी जीवाणु से तैयार किया जाता है। जीवाणु दलहनी फसलों को पौधों की जड़ों में मूलरोमों के द्वारा प्रवेश कर जाते हैं और कार्टेक्स में ग्रन्थियों बना लेते हैं। इन ग्रन्थियों में उपस्थित राइजोबियम नाइट्रोजन का भूमि में स्थिरीकरण करते हैं।

राइजोबियम जीवाणु खाद का उपयोग मुख्य रूप से दलहनी फसलें अरहर, उड़द, मूंग, चना, सोयाबीन, मूंगफली, मटर आदि में किया जाता है। फलीदार फसलों की प्रारंभिक अवस्था में डाली गई 20 से 25 किलो प्रति हेफ्टेयर नत्रजन उर्वरक की मात्रा को छोड़कर फसल का लगभग पूर्ण नत्रजन पोशक इस जीवाणु द्वारा प्रदान किया जाता है।

एक लिटर पानी में 125 ग्राम गुड़ का घोल बनाकर ठण्डा करें व इसमें एक पैकेट राइजोबियम कल्चर को मिला दें। अब इस मिश्रण को बीज पर छिड़के एवं इसे स्वच्छ हाथों से इस प्रकार मिलायें ताकी प्रत्येक बीज पर एक समान परत आ जाए। सामान्यतया 250 ग्राम राइजोबियम कल्चर 10 से 15 किलोग्राम बीज उपचारित करने के लिए प्रयाप्त होती है। उपचारित बीजों को किसी साफ बोरी या फर्स पर फैलाकर छायादार जगह पर सूखी कर तुरन्त बुआई करना चाहिए। खड़ी फसल में राइजोबियम कल्चर का उपयोग करने के लिए यदि पूर्व में इसका उपयोग नहीं किया गया है तो एक पैकेट कल्चर को 20-25 किलोग्राम बारीक मिट्टी या कम्पोस्ट में मिलाकर इस मिश्रण को हाथ से पौधों के आसपास दें एवं बाद में गुड़ाई कर मिट्टी में मिलाकर सिचाई करें।

जैव उर्वरक

(२) अजोला (इसे ग्रीन गोल्ड भी कहते हैं।)

अजोला एक जल फर्न है इसका उपयोग जैव उर्वरक के रूप में करते हैं। इसके उपयोग से भूमि की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। अजोला धान की फसल के लिए उपयोगी है। यह अम्लीयता, शुष्कता एवं बीमारियों की प्रतिरोधकता को सहन कर सकती है। अजोला पानी पर तैरती हुई एक फर्न काई होती है जिसका रंग हरा, लाल या कथई होता है।



धान के खेतों में यह अक्सर दिखाई देती है। छोटे - छोटे पोखर या तालाबों में जहाँ पानी एकत्रित होता है वहाँ पानी की सतह पर यह दिखाई देती है। अजोला का उपयोग जानवरों में दूध की मात्रा व वसा प्रतिशत बढ़ाने में किया जा रहा है, क्योंकि इसके उत्पादन में खर्च कम आता है। यही कारण है कि दिन प्रतिदिन इसकी उपयोगिता बढ़ती जा रही है। अजोला पोषण में दूध उत्पादन 10 से 20 प्रतिशत तक बढ़ता है। इसका प्रयोग 60 ग्राम तक करने पर 10 प्रतिशत तक सांद्र आहार घटाया जा सकता है। संकर नरल की गाय में 2 किग्रा सांद्र आहार की जगह 2 किग्रा अजोला खिलाते हैं तो दूध उत्पादन की क्षमता बढ़ जाती है।

अजोला तैयार की विधि :-

पानी के पोखर या लोहे के ट्रे में अजोला कल्चर बनाया जा सकता है। पानी की पोखर या लोहे के ट्रे में 5 से 7 से0 मी0 पानी भर दें। उसमें 100 से 400 ग्राम कल्चर प्रतिवर्ग मीटर की दर से पानी में मिला दें। सही स्थिति रहने पर अजोला कल्चर बहुत तेज गति से बढ़ता है और 2 से 3 दिन में ही दुगना हो जाता है। अजोला कल्चर डालने के बाद दूसरे दिन से ही एक ट्रे या पोखर में अजोला की मोटी तह जमना शुरू हो जाती है जो नत्रजन स्थिरीकरण का कार्य करती है। अजोला की विशेषता यह कि यह अनुकूल वातावरण में 5 दिनों में ही दो गुना हो जाता है। यदि इसे पूरे वर्ष बढ़ने दिया जाये तो 300 टन से भी अधिक सान्द्रीय पदार्थ प्रति हेक्टेयर पैदा किया जा सकता है यानि 40 कि0 ग्राम0 नेत्रजन प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है।



पौधा सुरक्षा हेतु जैविक विधियां

जैविक खेती में कीटों / रोगों का शस्य क्रिया द्वारा नियंत्रण

- ➔ फसल चक्रण ।
- ➔ फसल अवशेषों को नष्ट करना ताकि पिछले फसल के कीटों तथा रोगों के कारक नष्ट हो जायें।
- ➔ गर्मी में गहरी जुताई करके कीटों एवं रोगों के कारक को गर्मी से नष्ट करना।
- ➔ सही प्रजाति एवं स्वस्थ बीजों का चयन करना।
- ➔ सही समय पर निराई-गुड़ाई, रोगग्रस्त पौधों/टहनियों की कटाई-छटाई खेत के आस-पास की सफाई जिससे रोग/कीटों के वैकल्पिक पौधे नष्ट हो जायें।
- ➔ कीट भक्षी पक्षियों के बैठने के लिए डंडा लगाना ।
- ➔ कीटों/रोगों के सर्वाधिक प्रकोप के समय एवं बोआई के समय के बीच तालमेल बनाना।

उपर्युक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए जैविक खेती करने से फसल उत्पादन में आने वाली लागत को कम किया जा सकता है। इसके अलावा निम्नलिखित प्राकृतिक उत्पादों को भी सफलता पूर्वक जैविक खेती में फसल सुरक्षा हेतु उपयोग में लाया जा सकता है।



उपचार

बीजाणु अंकुरित हो जाएँ। इस कम्पोस्ट को एक एकड़ खेत में फैलाकर मिट्टी में मिला दें फिर बुवाई / रोपाई करें।

नर्सरी उपचार

बुवाई से पहले 5 ग्राम ट्राइकोडर्मा उत्पाद प्रति लीटर पानी में घोलकर नर्सरी बेड पर छिड़काव करें।

पौधा उपचार

प्रति लीटर पानी में 10 ग्राम ट्राइकोडर्मा घोल बनाकर पौधों के जड़ क्षेत्र को भिगोएँ

जड़ उपचार

प्रति लीटर पानी में 10 ग्राम ट्राइकोडर्मा घोल लें और कलम एवं अंकुर पौधों की जड़ों को 10 मिनट के लिये घोल में डुबोकर रखें। इसके बाद रोपण का कार्य करें।

पौधों पर छिड़काव

कुछ खास तरह के रोगों जैसे पर्ण चित्ती, झुलसा आदि की रोकथाम के लिए पौधों में रोग के लक्षण दिखाई देने पर 5-10 ग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।

बहुवर्षीय पेड़ों के जड़ के चारों ओर गड्ढा खोदकर 100 ग्राम ट्राइकोडर्मा पाउडर को मिट्टी में सीधे या गोबर / कम्पोस्ट की खाद के साथ मिला कर दिया जाय।

खड़ी फसल में फफूंदजनित रोग के नियंत्रण हेतु 2.5 किलोग्राम प्रति हेक्टर की दर से 400-500 लीटर पानी में घोलकर सायंकाल छिड़काव करें। जिसे आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर दोहराया जा सकता है।

जैविक खेती के अंगीकरण एवं प्रमाणीकरण योजना वर्ष 2020-21 से वर्ष 2021 तक के लिए प्रति एकड़ इनपुट हेतु देय अनुदान की विवरणी

क्र०	इनपुट के अंतयव	प्रति एकड़ दर			लाभुक
		प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष	
1	जैविक बीज कब या जैविक नर्सरी तैयार करने हेतु (प्रति एकड़)	500	500	500	किसान
2	परम्परागत जैविक उपादक उत्पादक जैसे- पंचगव्य / बीजामृत / जीवामृत इत्यादि की इकाई तैयार करने हेतु (प्रति एकड़)	1000	1000	1000	किसान
3	जैव नेत्र उत्पादन हेतु पौधा लगाना जैसे सिसाबोनिया ग्लिसिरिडिया इत्यादि (प्रति एकड़)	1000	1000	1000	किसान
4	बायोटेकनल एक्सट्रेक्ट उत्पादक इकाई (नीम उत्पादक) (प्रति एकड़)	1000	1000	1000	किसान
5	जैव उर्वरक / कॉम्पोस्टिया (नेत्राजन फिक्सिंज, पी0एस0बी0, के0एम0बी0 (प्रति एकड़)	1000	1000	1000	किसान
6	जैव कीटनाशी (Trichoderma, Pseudomonas Fluorescens, Melanizium, Beauveria Bassiana, Accelomyces, Verticillium) (प्रति एकड़)	700	700	700	किसान
7	Phosphate Rich Organic Manure as per FCO specification (प्रति एकड़)	1000	1000	1000	किसान
8	स्थानीय तरीके से आसानी से उपलब्ध प्राकृतिक कीट नियंत्रण सामग्री क्रय हेतु (प्रति एकड़)	300	300	300	किसान
9	वर्मी कंपोस्ट इकाई प्रति इकाई 6000 रु०	5000	5000	5000	किसान
10	कुल योग	11500	11500	11500	



**बिहार सरकार
कृषि विभाग**



बिहार सरकार
कृषि विभाग

सहजन की पत्तियों का अर्क

(पौधा बढवार टॉनिक)

निर्माण सामग्री

2 किग्रा सहजन की पत्तियाँ

5 लीटर गोमूत्र

5 लीटर पानी

बनाने की विधि

2 किग्रा सहजन की पत्तियों को बारीक पीसकर 5 लीटर गोमूत्र और 5 लीटर पानी में मिलाकर गला दें पाँच दिन बाद इस पानी को छान लें।



उपयोग

इस पानी के 500 मिलीलीटर को एक टंकी (15 लीटर पानी) में मिलाकर फसल पर छिड़काव करें। यह बाजार में मिलने वाले किसी भी टॉनिक से अच्छे परिणाम देता है।



बिहार सरकार
कृषि विभाग

उपलों से बना ह्यूमिक एसिड

(पौध बढ़वार टॉनिक)

उपलों से बना टॉनिक पौधों के लिए एक अच्छा पौध- बढ़वार टॉनिक (ग्रोथ प्रमोटर) है। इसके उपयोग से ह्यूमिक एसिड के समान ही परिणाम प्राप्त होते हैं। इसका प्रयोग छोटे पौध की बढ़वार दर में वृद्धि के लिए किया जाता है।

निर्माण सामग्री

- 20-30 उपले/कंडे / गोसे
- 50 लीटर क्षमता का पात्र



बनाने की विधि

एक 50 लीटर क्षमता के ड्रम में दो साल पुराने उपले / कंडे या गोसे की तह लगाकर पूरा भर दें। फिर उसमें उपर तक पानी भर दें। अब इसे 7 दिन तक रखा रहने दें। प्रतिदिन एक दो बार ड्रम को हिला दें। ताकि पानी हलचल पैदा हो। (डंडा डालकर नहीं हिलाना है, बल्कि ड्रम को पकड़ सावधानी पूर्वक हिलाना है) 7 दिन बाद टंकी से पानी निकालकर अलग कर लें और कंडो को निकालकर सुखा लें और अन्य उपयोग में ले लें। इस प्रकार प्राप्त पानी को निथार लें।

उपयोग

जो पानी मिला है वो पौधों की बढ़वार के लिए बहुत पौध बढ़वार टॉनिक है। इस पानी को तीन गुना सादे पानी में डालकर अच्छे से मिला लें खड़ी फसल पर स्प्रे करें। एक एकड़ के लिए लगभग 40 - 50 लीटर उपलो के पानी से बना 150 - 200 लीटर तैयार टॉनिक पर्याप्त होता है। अच्छे परिणाम के लिए 7 दिन बाद पुनः एक बार और छिड़काव करने से अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं।

भंडारण एवं अन्य सावधानियां

बनाने के बाद 1 माह के अन्दर उपयोग कर लें।



औषधिय पौधो की खेती

जैविक खेती अंतर्गत औषधिय पौधो की खेती का विशेष महत्त्व है। यह किसानो के लिए बदलते मौसम अनुकूल जंगली पशु से पुर्णतः सुरक्षित तथा फायदेमंद खेती है। यह एक नगद तथा सदा डिमांड मे रहने वाली खेती है। इसकी खेती मे विशेष उर्वरको की आवश्यकता नही होती है तथा यह मिट्टी के मुलभुत संरचना मे सुधार का कार्य भी करता है। किसान निम्नलिखित फसलो की खेती कर विशेष नगद लाभ कमा सकते है।

1 अश्वगंधा

यह एक सदाबहार तथा हमेशा डिमांड मे रहने वाला फसल है।

अंतराष्ट्रीय स्तर पर भी इसका बहुत डिमांड रहतर है।

बुआई का समय :- सितम्बर-अक्टुबर (फसल अवधी 5-6 माह)

बीज दर :- 8-10 kg / एकड़ (उत्पादन: 4-5 क्विंटल सुखी जड़)

अनुमानित लाभ :- 1 - 1.5 लाख / एकड़

2 चिया सिड्स

यह आज के समय का सबसे अधिक डिमांड वाली खेती है।

बदलती जिवन शैली मे आहार के रूप मे इसका विशेष प्रचलन बढ़ा है।

बुआई का समय :- अक्टुबर, नवम्बर

बीज दर :- 2 kg / एकड़ (फसल अवधी - 4 माह)

उत्पादन - 4-5 क्विंटल / एकड़

अनुमानित लाभ - 60 - 80 हजार / एकड़